28/4/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ओम् नमः शिवाय.....

ओमशांति! बाप बैठ करके समझाते हैं कि भक्तिमार्ग में बहुत ही भक्ति का डांस किया। ज्ञान का डांस नहीं किया। भक्ति का डांस किया। भक्ति का डांस जब होता है तो फिर ज्ञान का डांस नहीं। जब ज्ञान का डांस है तो फिर भक्ति का डांस नहीं; क्योंकि भक्ति का डांस ले जाता है दुर्गति में और ज्ञान का डांस ले जाता है सद्गति में। अब ये समझ में तो ठीक आता है; क्योंकि जानते हैं कि बरोबर सतयुग–त्रेता में भक्ति होती ही नहीं है और भक्ति शुरू ही होती है द्वापर से। तो जब भक्ति शुरू हुई तो ज्ञान का प्रालब्ध पूरा हो जाता है। बस, पीछे उतरती कला है। पीछे कैसी उतरती कला है, बाप बैठ करके समझाते हैं कि मैं जब कल्प–2 आता हूँ तो आ करके बच्चों को यही कहता हूँ कि बच्चों, तुमने भारत में बहुत ही हमारी ग्लानि की है। देखो, साफ आ करके कहते हैं ना कि जब–2 भारत में बहुत ही इस आदि सनातन देवी–देवता धर्म की बनिस्पत ग्लानि होती है...। ग्लानि किसको कहा जाता है, वो भी बैठ करके समझाते हैं। सबसे ग्लानि या डिफेमेशन या डिफेम जिसको कहा जाता है, निंदा जिसको कहा जाता है, वो करते हैं ऊँचे ते ऊँचे भगवत (की), जो बड़े ते बड़ी गवर्मेन्ट है। जिसको ये महिमा– शिवाय नमः, ऊँचे ते ऊँचा भगवत और जिसकी बहुत महिमा है। उनकी इतनी भारी महिमा को तुम लोग एकदम मिट्टी में मिला देते हो; क्योंकि कह देते हो कि वो...। ...भारतवासी मूर्ख बन जाते हैं बिल्कुल ही, तुच्छ बुद्धि बन जाते हैं वा उसको कहें पत्थरबुद्धि बन जाते हैं और भ्रष्टाचारी भी बन जाते हैं; क्योंकि ये विषियस दुनिया बन जाती है। पतित दुनिया बनने की शुरू होती है। अभी साफ आ करके बिल्कुल अच्छी तरह से समझाया था। मैं आता ही तब हूँ जबकि मनुष्य बिल्कुल ही ऐसे हो जाते हैं और फिर झाड़ भी बहुत बड़ा हो जाता है, जड़जड़ीभूत अवस्था को पा लेता है। विनाश लायक भी बन जाते हैं। विनाश तो है ही एक नामी–ग्रामी महाभारी महाभारत की लड़ाई। जिस समय में ये राज़ आ करके समझाते हैं कि देखो, मैंने ये यज्ञ रचा है, तुम बच्चों ये सभी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान समझाने और धर्म ग्लानि किसको कहा जाता है वो सब समझाने कि तुमने कैसे मेरी ग्लानि की है। मैं जो भारतवासियों को कल्प–2 आ करके स्वर्गवासी बनाय देता हूँ। सो मेरी ग्लानि के कारण, आसुरी मत पर, फिर देखो कितने कौड़ी तुल्य हो जाते हैं। तो दुश्मन तो है बरोबर। भई कहते हैं कि ये रावण राज्य है। हमको रामराज्य चाहिए। तो देखो, रावण राज्य में ये देहअभिमान है, पाँच विकार हैं। अभी ये तो ज़रूर है कि सतयुग में होते नहीं हैं; परन्तु शास्त्रों में बैठ करके आसुरी मत पर फिर देखो ; क्योंकि आसुरी मत शुरू हो जाती है ना। रावण मत शुरू हो जाती है। उसको कहा जाता है जो दैवी सम्प्रदाय वाले थे वो फिर आसुरी सम्प्रदाय बन जाते हैं। जो राम सम्प्रदाय वाले थे सो रावण सम्प्रदाय बन जाते हैं। अभी रावण राज्य, जिसको ही फिर कहा जाता है– जीत और हार, हार और जीत। अब विचार करो– मैं कब आऊँ! मुझे ज़रूर आना पड़ता है जबकि जिन्हों को मैंने राम राज्य दिया, वो फिर हार खाते हैं, जब सम्पूर्ण हार खा जाते हैं, बिल्कुल ही सम्पूर्ण भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। अभी हिसाब–किताब तो सब तुम बच्चों को समझाया ही है कि कैसे मैं आ करके वर्सा देता हूँ, कैसे तुमको रावण आकर श्रापित करते हैं। इस समय में ये खास भारत और वो आम। इन पर्टीक्युलर एण्ड इन जनरल; क्योंकि भारत की महिमा का भी किसको पता नहीं है। ये भारत प्राचीन देश है। तो पहले–2 ही ये भारत ही था, जिसको ही पैराडाइज़ कहा जाता है। वो भी किसको पता नहीं है। भारत स्वर्ग था। कब था, कैसा था, कौन राज्य करते थे। चित्र भी होते हुए बिल्कुल ही जैसे

ब्लाइंड/बुद्धिहीन बन गए हैं। कुछ नहीं समझते हैं। जब बैठकर उनको समझाते हैं, उनकी शिकल की तरफ देखने में आता है, जो न समझते हैं, तो जैसे बंदरों के मिसल देखने में आते हैं। ये हैं तो बरोबर बंदरों से भी बदतर; क्योंकि बाप समझाते हैं कि देखो हैं तो मनुष्य ही मनुष्य, तुम भी देवताएँ थे। मनुष्य की सूरत थी, सीरत थी दैवी। अभी मनुष्य की शिकल हो, सीरत है आसुरी। तो अभी जिनको समझाते हैं वो समझते हैं। जिन्होंने कल्प पहले समझा है वही समझते हैं कि बरोबर इसके ज्ञान के आगे हम बंदरों मिसल थे। यानी मनुष्य हो करके अगर अपने रचता को, क्रियेटर को...। लौकिक बाप को तो जनावर भी जानते हैं। वो तो बिल्कुल ही कॉमन बात है। बाकी मनुष्य जो अपने बाप को न जाने और उनको बैठ करके फिर और ही गाली दे। एक तो न जाने और फिर दूसरी, गाली देवे कि कुत्ते में, बिल्ले में, फलाने में, ठिक्कर में, भित्तर में। तो बोलते हैं ऐसे इतने बड़े की बेअदबी करने से या डिफेम करने से...। ये ड्रामा भी ऐसे बना हुआ है कि डिफेम करते–2 कौड़ी तुल्य बन गए हैं। मूल बात यही है कि एक तो बाप की डिफेमेशन और दूसरा, बाप ने जो बैठ करके राजयोग सिखलाया, उस श्रीमत भगवत गीता की डिफेमेशन। बड़ी डिफेमेशन। समझा ना। इन जितनी बड़ी भूल कभी हो ही नहीं सकती है कि बाप की बायोग्राफी बच्चे की कर दिया और बाप को गुम कर दिया। बाप की बायोग्राफी में श्रीकृष्ण का नाम डाल करके...। पहले नंबर का बच्चा है ना, स्वर्ग का मालिक। तो बाप है स्वर्ग का स्थापन करने वाला हैविनली गॉड फादर। तो हैविन में है पहले नंबर में श्रीकृष्ण, ऐसे कहेंगे ना। तो उनका नाम दे दिया मेरे...। तो देखो, इसको डिफेमेशन कहें ना। इसको ग्लानि कहा जाता है। सो भी करते आए हैं, करते आए हैं, करते आए हैं। जब बिल्कुल ही पूरे पतित बन गए हैं, पूरा भारत का डाउन फाल हो गया है। हो जाता है, ड्रामा बना हुआ है। जब ऐसी हालत होती है तब बाप आ करके समझाते हैं कि मैं आता हूँ। सो तुम देखते हो बरोबर सन्मुख बैठे हैं और समझाते हैं। बोलते हैं– कल्प–2 ऐसे ही मैं आ करके समझाता हूँ। रोज़–2 जो पास्ट में समझाया वो कल्प पहले भी ऐसे ही समझाया और ऐसे ही फिर ये दैवी सम्प्रदाय स्थापना हो रही है, बदल रही है; क्योंकि इसको कहा ही जाता है रिज्युबिनेशन यानी मनुष्य को देवता बनाना। तो इससे सिद्ध हुआ ना कि मेरे को बुलाने से कभी भी मैं आता नहीं हूँ। मनुष्यों को मालूम नहीं है कि ये भगवान आता कब है। बाप कहकर जाते हैं– जब–2 धर्म की ग्लानि होती है और जबकि मुझे पतित दुनिया को पावन बनाना होता है अर्थात् कलहयुग को सतयुग बनाना होता है तब...। अभी कलहयुग तो पूरा हुआ है; परन्तु मनुष्यों ने वो भी झूठ लिख दिया है, जिसने ये शास्त्र बनाया है। तो बोलते हैं– भले उनको क्या भी नाम रख दिया है मनुष्यों ने; पर ये है तो रावण मत पर बनाया ना ; क्योंकि भक्ति सारी चलती है रावण मत पर, आसुरी मत पर और पूरी चलती है। जितने वो खुशियों में रहते हैं सतयुग–त्रेता में अपना वर्सा पाए, तैसे ये भगत श्राप पाते–2 तहाँ कि एकदम आ करके खतम होते हैं। जैसे देवताएँ भी प्रालब्ध भोग–2, त्रेता के अंत में वो ज्ञान की प्रालब्ध खतम होती है। फिर शुरू होती है रावण की प्रालब्ध, आसुरी प्रालब्ध। तो भी पहले तो प्रालब्ध अच्छी होती है। भक्ति अच्छी, अव्यभिचारी भक्ति। फिर वो भक्ति भी नीचे उतरती–2...। तो देखो, सीढ़ी ठीक बनी ना। देवताओं के लिए भी सीढ़ी बनी बरोबर पहले। मिसाल भी देते हैं कि हमेशा हर एक चीज़ पहले सतोप्रधान, पीछे पिछाड़ी में आकर तमोप्रधान बनती है। सतोप्रधान से फिर सतो, फिर रजो, फिर तमो। खाद पड़ती भी जाती है और जेवर भी ऐसे ही काले होते जाते हैं। अभी बच्चों को तो बहुत अच्छी तरह से समझाया जाता है; परन्तु बच्चों में धारणा बहुत कम होती है। ड्रामा प्लैन अनुसार, ऐसे तो

ज़रूर कहेंगे ना कि इस समय में जो–2 भी बच्चे हैं, सबको नम्बरवार देखते हैं। किसमें देखो तो पाई का भी ज्ञान नहीं है।... तो अभी इस समय में सभी ये कपड़े सबके फटने लायक फिर। ये मनुष्यों की बात है ना कि सबके कपड़े एकदम जड़जड़ीभूत अवस्था को पाए हैं। उसमें भी नंबरवार पुराना कपड़ा इनका हो गया है। ये बहुत गरीब बन गए हैं। तो बोलते हैं गरीबों को फिर साहूकार...बनाना पड़ेगा; क्योंकि पहले भी साहूकार यही थे, सो गरीब बने हैं। फिर गरीबों को साहूकार। तो बरोबर मनुष्य नहीं समझते हैं। ...मनुष्य बंदर है। उनको समझाते हैं कि भारत स्वर्ग था, हैविन था और ये इनका राज्य था। वो समझते ही नहीं हैं। तो बहुत ... हैं जिनको समझ में नहीं आता है। अरे भई, दूसरा कोई भी राज्य नहीं था। ये चक्र में देखो, इस्लामी–बौद्धी पीछे आए ना। इनको 2500 वर्ष हुआ, 2250 हुआ, 2000...। उनके आगे कौन थे? ..... प्रैक्टिकल में ये। उसको कहा जाता है थ्योरिटीकल यानी झूठी बनाई हुई आखानी है। इसको कहा जाता है प्रैक्टिकल। वो आखानियाँ सुनी हुई हैं आखानियों के रूप में। कोई ने बैठकर ये इतना बनाया है। तो देखो जब बनाया है इतना ; देखो गीता का मान कितना है और हम क्या कहते हैं, हम बोलते हैं गीता तो खण्डन की हुई है। गीता में कुछ है ही नहीं। गीता पढ़ने से मनुष्य दुर्गति को पाते हैं। देखो, मनुष्य की गीता बहुत प्रेम से पढ़ते हैं; परन्तु बाप बैठ करके समझाते हैं कि मनुष्य की बनाई हुई जो गीता है, ये सभी गपोड़े लगे हुए होते हैं। तो वो गपोड़े लगाते–2...। वो झूठे हैं। देखो, भला अच्छा गीता पढ़ते आए हो, दुर्गति को आकर पाए हो, तमोप्रधान। अपने आप ही कहते हो– हे पतित–पावन आओ। हम भ्रष्टाचारी बन गए हैं। तो गीता पढ़ने से श्रेष्ठाचारी। अब है ही एक गीता ; क्योंकि भगवान आ करके सबको सद्गति देते हैं। और कोई शास्त्रों में तो रखा कुछ भी नहीं है। भले पढ़ते रहे। जो–2 भी शास्त्र जिन्होंने बनाए हैं वो पढ़ते रहो, पढ़ते रहो, सभी पढ़ते रहो। उसमें गीता भी तो बनाई है ना। पढ़ते रहो, पढ़ते रहो, आ करके तमोप्रधान बने हैं; क्योंकि भक्तिमार्ग है ये। तो ज्ञान और भक्ति। सन्यासी लोग गाते बहुत हैं कि ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। सो तुम्हारे बुद्धि में बिल्कुल ठीक बैठा हुआ है। भई बरोबर बाबा ज्ञान देते हैं, हम देवता बनते हैं। पीछे आधा.. कल्प देवता बनते हैं। फिर भक्ति शुरू होती है। भक्ति जब पूरी होती है तब इस भक्ति से वैराग्य या पुरानी दुनिया से वैराग्य। उसमें भक्ति आ गई; क्योंकि जब हमको ज्ञान मिल रहा है तो फिर भक्ति को वैराग्य। तो भक्ति के वैराग्य से सारी दुनिया से वैराग्य। दिखलाने के लिए कि वो हद...। वो सन्यासी फिर भी आ करके भक्ति करते हैं। देखो, अभी भी भक्ति करते हैं ना। गंगा में स्नान करना भक्ति करनी है। पतित से पावन तो नहीं होना है। भक्ति है, झूठ है । तो देखो फिर भी ये सन्यासी भक्ति ज़रूर करते हैं; क्योंकि भक्ति का राज्य है ना। कहाँ जाएँगे? ये वेद पढ़ना, जप करना, तप करना, तीर्थ करना, ये सभी कुछ करना ये है ही सभी भक्ति। सो तो सभी, देखो वो नागे लोग कितने आते हैं! लाखों आते हैं ये सभी स्नान करने के लिए। स्नान करते ही रहते हैं। तो बाप बैठ करके अच्छी तरह से समझाते हैं। कहते हैं भक्ति माना ही भक्ति आधाकल्प। भक्ति सतोप्रधान, फिर वो भक्ति तमोप्रधान बनती है। ये भी फिर सतोप्रधान, सो फिर आ करके सतो, बस फिर शुरू होती है भक्ति। गाया भी जाता है– आधा दिन, आधा रात। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात अर्थात् ब्राह्मणों का दिन, ब्राह्मणों की (रात)। एक ब्रह्मा की तो नहीं होती है ना। प्रजापिता है ना, तो ज़रूर बच्चों की भी तो होगी ना।... अभी जानते हो कि तुम अभी दिन में जाते हो। भक्ति की रात पूरी होती है। भक्ति में बड़ा दुःख है। सब दुःख है। उसमें पहले–2 विषियस बनते हैं, पीछे रोगी बनते हैं, पीछे सभी ये धक्का खाने का।

..... किसके लिए धक्का खाते रहते हैं? भगवान से मिलने के लिए; परन्तु रात को धक्का खाते हैं, तब मिलता ही नहीं है भगवान। तब मिलना ही नहीं है। अभी तुम लोग एक्युरेट समझ गए। ये भक्ति में कभी भी भगवान मिलता नहीं है जो आ करके सद्गति देवे। देता है सद्गति सर्व को, जबकि सर्व दुर्गति को पाते हैं। सर्व दुर्गति को पाते हैं जब कलहयुग का अंत होता है। तो देखो, अभी इस समय में सब दुर्गति को हैं। तुम्हारे सिवाय यथार्थ रीति से अपनी आत्मा और बाप को, परमात्मा को कोई भी नहीं जानते हैं। और यथार्थ रीति भी देखो कैसी है– आत्मा बिन्दु, परमात्मा भी बिन्दु। कोई भी नहीं समझ सकेगा ऐसे। समझा ना। अब वो परमात्मा आ करके ब्रह्मा के तन से बोलते रहते हैं, वो कोई भी नहीं जानते हैं। दिखलाया हुआ है भागीरथ। जैसे ये बैल भी दिखलाते हैं। कभी भागीरथ या बैल वगैरह, ये कोई कृष्ण तो नहीं हुए ना और फिर कहते हैं कि मैं साधारण बूढ़े तन में भी आता हूँ। कृष्ण तो बूढ़ा नहीं है ना। कृष्ण तो फक्कड़ है एकदम जब जवान होता है तो। बाप बैठ करके सब बात अच्छी तरह से समझाते हैं; परन्तु बुद्धि में बैठती नहीं हैं। सुनते तो बहुत हैं ना। नहीं तो एक बार सुनने से ही एकदम निश्चय हो जाना चाहिए। ये तो बाप कहते हैं कि मैं तुम्हारा बाप हूँ। निश्चय है? हाँ बाबा, निश्चय है। अच्छा, जब निश्चय है तो अपने वर्से को याद करो और मुझे याद करो। मुझे घड़ी–2 याद करने से तुम्हारा विकर्म विनाश होगा।.....ऐसे साजन या बाप को कोई भूलना चाहिए ! क्योंकि दो चीज़ का फिर वहाँ भी दृष्टान्त देते हैं ना। कोई स्त्री को भूलते हैं या स्त्री कभी पति को भूलती है? कभी भी नहीं। बच्चे बाप को भूलते हैं? बाप भूलता है? कभी भी नहीं। यहाँ तुम क्यों कहते हो घड़ी–2 (कि) बाबा, आप जो हमको स्वर्ग का मालिक बना रहे हो, उनको भूल जाते हैं। ...भूल जाएँगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे? अगर याद न करेंगे तो जंक कैसे निकलेगी? ये जंक है ना जैसे इसको। तो मिसाल भी देते हैं, जैसे कि वो जंक चढ़ जाती है तो घासलेट में डाल देते हैं। मुख्य ते मुख्य बात। वो तो सब समझाते हैं, वो तो कॉमन बात है सभी समझने की। अपना कोई दूसरे धर्मों से भी कोई ताल्लुक नहीं है। वो तो हिस्ट्री–जॉग्राफी है। एक/दो के ऊपर लड़ाई करते हैं, फलाना करते हैं। ये तो बड़ी–2 बातें हैं। वो तो कोई छिपी हुई नहीं है। आधा हिस्ट्री–जॉग्राफी तो जानते हो जो पढ़ते हो। जो न पढ़ते हैं तो वो भी बिचारे नहीं जानते हैं। अब बच्चों को बैठ करके बड़ी हिस्ट्री–जॉग्राफी समझाते हैं। अच्छा, जैसे उसमें कोई भी इतना जास्ती पढ़ते नहीं हैं, बिल्कुल ही नहीं पढ़ते हैं, वैसे इसमें भी ऐसे ही है, कोई भी नहीं पढ़ते हैं। बाप पढ़ाते हैं, उनकी बुद्धि में नहीं बैठती है। तो भी कहते हैं– अच्छा, कोई हर्जा नहीं है। बुद्धि में नहीं कुछ बैठता है। दो बात– बाबा और वर्सा तो याद पड़ेगा या वो भी भूल जाते हैं? अच्छे–2 को, पुराने–2 को, उनकी बुद्धि में वो खुशी आवे ना। तब तो खुशी आवे बाबा से– अभी ये शरीर छोड़ेंगे, हम बादशाही में जाते हैं। अभी तुम नहीं समझते होंगे कि बाबा ये जानते हैं कि ये अंतिम जन्म है। बाबा ने ये कहा है और तुम जानते हो कि बरोबर देखते हो। सूक्ष्मवतन में जाते हो तो भी फिचर्स यही देखते हो और पहचान लेते हो। मूलवतन में ध्यान में जाते हो, रास लगाते हो, तो भी पहचान में तो यही बाबा–मम्मा लक्ष्मी–नारायण बने हैं या राधे–कृष्ण बने हैं। हम डांस करते हैं। ये तो अभी पता पड़ता है ना। कभी भी सतयुग से ले करके कलियुग तक। ये ठीक है कि सतयुग में रहते ही हैं और ये हमको मालूम है कि ये शरीर छोड़ करके दूसरा शरीर लेते हैं। अभी वो है ही सतयुग। उसको कहा ही जाता है सतयुग। इनको ये मालूम नहीं है कि सतयुग के पीछे कोई त्रेता आएगा या द्वापर आएगा। कुछ भी नहीं। बस, वो फॉलो करते जाते हैं। उनको ज्ञान की बात कुछ भी नहीं जानते हैं। बस, वो ऐसे ही आवड़े हैं। पुनर्जन्म लेते रहते हैं। उसमें आत्माभिमानी

बाप बैठकर समझाते हैं। पीछे आत्मअभिमानी के बदले में देहअभिमानी बन जाते हैं। बाकी ये नॉलेज सिर्फ अभी तुमको है। जो भी उतरते आते हैं, उतरते आते हैं, ये नॉलेज कुछ भी नहीं है। नॉलेज सिर्फ ब्राह्मणों में है। और कोई के पास, जिसको ज्ञान कहा जाता है, सो कोई में भी नहीं है। ज्ञान सिर्फ ज्ञानेश्वर, जो ज्ञान का सागर है, वो आ करके... और ब्राह्मणों को। ये ब्रह्मा द्वारा किसको सुनाएँगे? ब्रह्मा के बच्चों को सुनाएँगे ना। तो शूद्र कोई ब्रह्मा के बच्चे तो नहीं हैं ना। ब्राह्मण के बच्चे ब्रह्मा। उनको तो कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। तो रावण सम्प्रदाय, इन सम्प्रदाय में रात–दिन का फर्क है। ये अपना सम्पूर्ण, गुणवान बनते जाते हैं, विकारों से दूर बिल्कुल ही एकदम। भले अंतिम जन्म है, डिफीकल्टी है और बाबा कहते हैं हो तो सभी गृहस्थ व्यवहार में। इसलिए गृहस्थ व्यवहार में रह करके भी तुम बाप को याद करो। कर्म करना है। दिल भले कर्म में; परन्तु बुद्धि का योग बाप में। कर्म में सब कुछ आ जाता है। वैराग्य भी तो बच्चों को ज़रूर चाहिए। वैराग्य का अर्थ ही है देह सहित देह के सबको भूल करके अपन को नंगा समझ करके। नंगा आए थे, नंगा जाना है। तो यही जब यहाँ है तो ये पुरानी दुनिया खलास हो जाने वाली है। हम बाबा के पास जाने वाले हैं। हम नई दुनिया में आने वाले हैं। तो सारा दिन ये मेहनत और तो बाबा कोई दूसरी मेहनत तो नहीं बताते हैं ना। ये खेल है सो तुमको समझाता हूँ। ये क्या हाल होता है, फिर मैं कैसे आता हूँ। चलो, कौन जाएगा! (रिकॉर्डः– धरती को आकाश पुकारे...) तो सतयुग है प्रेम का... और ये है फिर विप्रेम यानी दुश्मनी। दुश्मनी किसको कहा जाता है? स्त्री और कन्या और बालक आपस में प्रेम करने को मिलते हैं; परन्तु प्रेम नहीं करते हैं, एक/दो की सत्यानाश कर देते हैं। ये प्रेम तो नहीं हुआ ना– एक/दो के ऊपर काम–कटारी चलाना, एक/दो को ज़हर पिलाना। ये कोई प्रेम की बात हुई! सतयुग में ये कोई नहीं करते हैं। वहाँ प्रेम होता है बहुत।...समझाते हैं कि अभी ये कोई प्रेम नहीं है। ये शादी करना एक/दो में, ये प्रेम वो नहीं है। वो तो एक/दो को बरबादी करने की है। इसलिए अभी शादी न करना बेहतर है। अगर करते भी हो तो भी बालब्रह्मचारी भीष्मपितामह हो करके दिखलाओ। तो उनको दिखलाएँगे। तुम कहते हो– नहीं रह सकते हैं। वाह! उनको मिलती है, प्राप्ति होती है, क्यों नहीं रह सकेगी! क्योंकि प्राप्ति बहुत है। तुम्हारे में कोई प्राप्ति तो है नहीं। तुम्हारा हठयोग है, ये राजयोग है। हमको राजाई मिलती है। एक अंतिम जन्म पवित्र रहने से हमको मिलती है। तुम कितना भी वहाँ जाकर रहो, धूर भी नहीं मिलती है, छाई भी नहीं मिलती है। हाँ, मान्यता ज़रूर होती है। गुरू बनते हैं बहुतों का। आमदनी शरीर निर्वाह। .... सुख के संबंध की दुनिया। तो ज़रूर अपने टाइम पर चक्कर लगाएँगी। सतयुग में सुख का संबंध तो कलहयुग में दुःख का बंधन। ये है दुःख का बंधन जबकि रावण राज्य शुरू होता है। बाबा जब आते हैं, रावण छूटता है, फिर है सुख का संबंध। अब ये याद भी बहुत बच्चियाँ भूल जाती हैं। अगर ये भी याद करें कि सुख के संबंध में जाते हैं, तो भी खुशी भी होवे और याद भी करें ; क्योंकि सुख देने वाले को याद करना पड़े। तो भी बहुत मुश्किल है। बड़ी माया दुस्तर है, बात मत पूछो।...से पाप होते हैं। बाबा बोलते हैं– पाप न करो। तो जोर कर भी बहुत कराती है माया। अज्ञान काल में जो कोई पाप न करे ना, वो भी ज्ञान काल में कर लेते हैं।

...सभी सेन्टर्स के ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शन चक्रधारी सर्विसेबुल बच्चों को आज गुरूवार के दिन बापदादा का दिल व जान, सिक और प्रेम से यादप्यार और गुडमॉर्निंग।